

में दो या दो से अधिक फसलों को एक साथ, इस प्रकार मिलका बोया जाता है कि जिस प्राचीन तरीके को एक फसल का बोया जाता है। दूसरी फसल उन्हें पूछ कर पूछते हैं। इस प्रणाली में विभिन्न वर्षों का फसल एक साथ बोया जाता है। इससे इनके काटने का समय अलग-अलग हो जाता है। फसलों के इस तात्परता में शीघ्र पकवान किया जाने वाली फसलें यहाँ आती हैं और देर से पकवान किया जाने वाली फसलों को देर से काटा जाता है। फसलों के राशनपर्यंत में किसान को अधिक तानि को समझाना कम होती है क्योंकि बाजार में यदि एक फसल का भाव गिर जाता है तो उसकी कमी दूसरी फसल में पूरी हो जाती है। इसके अलिंगन, यदि किसी कामनायांकियों वाले किसी एक फसल की उपज कम रह जाए, तो दूसरी फसल किसान को शतिष्ठि कर देती है। उदाहरणतः जब गेहूं की फसल अच्छी बाती होती है कि किसान को अन्य उन्हाँचों तथा सररों में न्याय हो जाता है। जब गेहूं और जी एक ही खांड में जोए जाते हैं तो इस मिश्रण को गोजई (Gujai) कहते हैं। जब गेहूं और घना साध-साध जोए जाते हैं तो इस मिश्रण को गोखनी (Gochani) कहते हैं। जी और जोए के मिश्रण को बेझर (Bejhar) कहते हैं।

### शास्य मौसम (Crop Seasons)

भारतीय कृषि-वर्ष में तीन शास्य मौसम पाए जाते हैं जिन्हे खटीफ, रबी तथा जायद कहते हैं। खटीफ का मौसम मापसून के अधिक होने से गुरु हो जाता है। इस मौसम को मुख्य फसलें-चालन, मक्का, ज्वार, बाजरा, कटाम, तिल, मूँगफली तथा कुछ राने, जैसे—मूँग, गर्ज, अदि हैं। इन फसलों को अधिक तापमान तथा अपेक्षाकृत अधिक आर्द्धता की आवश्यकता होती है। मुख्यफ का मौसम समाप्त होने के पश्चात् रबी का मौसम गुरु होता है और यह शीत ऋतु के अनुक्रम रहता है। इस मौसम में ये फसलें उगाई जाती हैं जो कम तापमान तथा अपेक्षाकृत कम वर्षा में प्रयोग सकती हैं। इस मौसम की प्रमुख फसलें—गेहूं, जी, ज्वार, रना तथा तिलहन, जैसे—अलसी, तोरिया, सरसों आदि हैं। जायद ग्रीष्मकालीन शास्य मौसम है। इसकी प्रमुख फसलें चालन, मक्का, मूँगफली, सर्जियाँ तथा कल आदि हैं। अब दानों के भी कुछ ऐसे चीजों का विकास किया गया है जो गोप्यकाल में सफलतापूर्वक जोए जा सकते हैं।

### हरित क्रान्ति (Green Revolution)

हरित क्रान्ति कृषि उत्पादन में आवधीनक तथा अभूतपूर्वी प्रगति की दोषक है। सन् 1960 के बाद का समय कृषि उत्पादन में बढ़ि की दृष्टि से बहुत ही महत्वपूर्ण है। इसी समय प्रो. नार्मन अर्लैस्ट बोरलूग (Prof. Norman Ernest Borlaug) तथा उनके महायोगियों ने मेक्सिको (Mexico) में गेहूं की अधिक उपज देने वाली फसलों का विकास किया। इसके फलस्वरूप सन् 1965 में मेक्सिको में गेहूं की प्रति हेक्टेयर उपज 5,000 किलोग्राम से बढ़कर 6,000 किलोग्राम हो गई। इस प्रकार प्रो. नार्मन अर्लैस्ट बोरलूग महाद्य

का विकास में दीर्घ कालि का अव्याप्ति भवा जाता है। जिस दृष्टि से इसी प्रकार की बढ़ि हुई। लोकों दृष्टिकोण के दृष्टि विकास, खाने का प्रयत्न कर रहा है और इस कार्यी दृष्टि साकारा ने इस दृष्टि हुई है।

विल्लिम गॉडी नामक वर्ग का प्रथम संस्करण 1962 में रिलीज़ (William Gaud) ने 'उत्पादकीय विकास का दृष्टि' में अपने संधारण 'The Green Revolution: Accomplishment and Apprehensions' के अन्तर्गत लिखा। उन्होंने लिखा कि लोकों दृष्टिकोण के विकासकील दृष्टि में बढ़ि विकासी विकास में है और बढ़ि के विकास की गति बड़ी दीमी है। इन दृष्टि की विकास उत्पादन बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं और यह दृष्टि कानूनिकारी परिवर्तन दृष्टि है।

आवकन हरित क्रान्ति विकास दृष्टि की दृष्टि में प्रयोग जाता है। कुछ विद्वान् इसे विकासकील दृष्टि में बढ़ि के विकासकील उत्पादन को बढ़ाने के संदर्भ में कहते हैं। इनका अनुसार इस दृष्टि में लोकावल की कमी और कृषिकाल ये अन्यतोंका की अपनी काफी हड़तक है तक है विकास में जारी हो जाता है। कुछ अन्य विद्वान् इस दृष्टि का प्रयोग कुछ विभिन्न विभिन्न किसानों के मुद्दों के संदर्भ में कहते हैं। ये खाड़ाओं, विरोधीतः गेहूं व ज्वार की अधिक उत्पादन की जाली नई किसानों के विकासकील उत्पादन में बढ़ि बढ़ीकरण बढ़ि के संदर्भ में हरित क्रान्ति का प्रयोग करते हैं। इसे, डॉ. दंतेवाला (Prof. Dantewala) के अनुसार हरित क्रान्ति का दृष्टि दृष्टि है—एक जी नई तकनीक और दूसरी अधिक उपज देने का दृष्टि अतः हरित क्रान्ति का अर्थ कृषि उत्पादन में हड़ि उत्पादन दृष्टि है जो नई तकनीक तथा अधिक उपज देने वाले दृष्टि के दृष्टि से हो रही है।

### भारत में हरित क्रान्ति (Green Revolution in India)

भारत में सन् 1966 से खटीफ मौसम में नई कृषि दृष्टि दृष्टि गई जिसे 'अधिक उपज देने वाली किसानों का कार्यक्रम' (High Yielding Varieties Programme—HYVP) के नाम से जाना गया। सन् 1967-68 में खाड़ाओं के उत्पादन में 1966-67 की तुलना में लगभग 25 प्रतिशत की बढ़ि हुई। यह बढ़ि इस दृष्टि के दृष्टि का लोकनकाल के 16 वर्षों में होने वाले परिवर्तनों की अवधि की अधिक तथा तीव्र थी। अधिक बढ़ि का होना वास्तव में एक अधिक तथा तीव्र थी। अधिक बढ़ि को हारीत क्रान्ति करा देना जी के समान ही था। अतः इस बढ़ि को हारीत क्रान्ति करा देने वाले जी, हारीत के जालों में 'हारीत क्रान्ति उत्पादन 1968 में होने वाले उत्पादन विवरण' के लिए प्रयोग किया जाता है जो यह गोप्यकाल में उत्पादन में हड़ा द्या और अब भी जारी है।

उत्पादन की वृद्धि को विस्तृत रूप से वर्णिया गया है। इसमें उत्पादन की वृद्धि का विवरण दिया गया है—(1) कृषि की वृद्धि (2) जल विभाग (3) लालची अधिक वर्षा की वृद्धि—उत्पादन की वृद्धि वर्षा की वृद्धि।

### 4. कृषि की पुष्टि विधियाएँ अथवा कारक (Sources or Factors of Green Revolution)

इस विधि की कारणों में निम्नों पुष्टि विधियाएँ शामिल हैं :

(1) उत्पादक उत्पाद देने वाले बीजों का प्रयोग ( Use of Yielding Varieties—HYV )—सन् 1966 से कृषि विभाग द्वारा किए गए अधिक उत्पाद देने वाले उत्पाद बीजों का एक विद्युत जलत बीजों के प्रयोग का यह कार्यक्रम जलत बीजों (सेहु, चाकल, बाजरा, मस्ता और ज्वार) के विकास पर। इन बीजों के लिए गेहूं के कलनाम व सोना, गोडी, लम्बा के मणि-101, ज्वार के CSH-2 तथा चाकल के गोडी व यह अद्वितीय प्रमुख हैं। इन बीजों के अधिकारा विभाग ने भारी कृषि अनुसंधान परिषद ( Indian Council of Agricultural Research ) द्वारा कृषि विद्युतिकालीनों ने विकास दिया है। इन बीजों की पूरी गण्डीय बीज विवरण तथा तात्त्विक विवरण ( Tatas Seed Development Corporation ) का है।

(2) कीटों का प्रयोग ( Use of Fertilizers )—हमारे अधिक की जात के सभ में प्रयोग करने की पार्थ्यता ही है। जलत 100 करोड़ टन गोबर प्रति वर्ष प्राप्त होता है। यह नुस्खा जलत जग भिन के क्षय में प्रयोग किया जाता है। अतः जलत की जात याकूब माला में उत्तित जार नहीं मिलती जिससे जलत बढ़ती जाती है। नई कृषि विभाग के अन्तर्गत सम्पादनिक विभाग ने जलत की गोपनीयता दिया गया जिससे कृषि उत्पादन बढ़ता हुआ है। सन् 1967-68 में 11 लाख टन उत्पादकों ने 1971 में 45 लाख टन तथा सन् 2005-06 में 203.4 लाख टन जलत में उत्पादकों के उत्पादन में भी बहुत तीव्र वृद्धि हुई है। सन् 1960-61 में केवल 1.50 लाख टन ही उत्पादकों ने जलत 6 जो बढ़कर 1970-71 में तगड़भग 11 लाख टन में 101 लाख टन हो गए।

इन दो जलत की बदली बीज को पूरा करने के लिए हमें उत्पादकों की आवश्यकीय करना पड़ता है। सन् 1960-61 में 1.226 लाख टन तथा 2005-06 में 60.8 लाख टन

उत्पादकों की आवश्यकीय करने की विधि जलत की विवरण में दिया गया जाता है। जलत जिसे भारतीय प्रतिवेदन में विवरण का बहुत महत्व है, जलत में जारी युर्न नामक तथा जलत विवरण के जालालूर्न विवरण है। सन् 1965-66 में 320 लाख टन की पूरी जलत की विवरण की जो विवरण 1986-87 में 641 लाख टन हो गई। जलत 1995-96 में 894 लाख टन हो गई। सन् 2010 तक 1130 लाख टन की विवरण की जो जलत है।

5. कीटनाशक औषधियों का प्रयोग ( Use of Pesticides )—अधिक उत्पादन जलत के लिए फसलों को कोहड़ी तथा बीमारियों से बचाना जरूरी आवश्यक है। इसके लिए कीटनाशक औषधियों का प्रयोग किया जाता है। हासिल कृषि के अधीन इन औषधियों के प्रयोग को बहुता गया है। जलत साकारता ने इसके लिए एध मारक्षण निर्देशनालय ( Directorate of Plant Protection ) की स्वाक्षरता की है।

6. आधुनिक कृषि-यंत्रों का प्रयोग ( Use of Modern Agricultural Machinery )—भारतीय कृषि में पूर्ण साधारण तथा परम्परागत ताथ के औजारों के स्थान पर आधुनिक यंत्रों का प्रयोग अधिक बढ़ गया जिससे हारित कृषि को सफलता मिली। आधुनिक कृषि-यंत्रों में ट्रैक्टर, कार्पोड्रून, हार्डेमटर, एंजीन, पिलर, द्विल, बिजली की मोटरों तथा पम्पिंग मेंट आदि प्रमुख हैं। किसानों को ममती तथा अच्छी मशीनरी दिलाने के लिए विभिन्न राज्यों में कृषि उद्योग निगम ( Agro-Industries Corporation ) स्थापित किए गए हैं। कई राज्यों में ट्रैक्टर तथा जन्य कोम्पनी उपकरण किए गए दिलाने के लिए कृषि-सेवा केंद्र ( Agro-Service Centres ) खोले गए हैं।

7. बहु-फसल ( Multiple Cropping )—जलत बीज, गोपनीयनिक उत्पादक, जिल्हाई कृषि यंत्रों वाली आदि के प्रयोग से फसलों कम समय में तैयार होने लगी जिससे एक सूत में एक वर्ष में एक से अधिक फसलों उत्पादन की सम्भव हो जाता। उदाहरणातः आदि किसी सूत में अप्रैल के महीने में गेहूं की फसल काट ली जाए तो उसके पश्चात् उस सूत में मूँग आदि की फसल जो दो जातों हैं जो लगभग दो माह में तैयार हो जाती हैं। इसके पश्चात् उसी सूत में कृषि उत्पादन में उत्तरोधारीय वृद्धि होती है। जलत के कई इसाको में बहु-फसली योजना 1967-68 में शुरू की गई और 1990-91 में 3.60 करोड़ हेक्टेयर भूमि पर बहु-फसली कृषि की गई। 2001-02 में बहु-फसलीय योजना 4.59 करोड़ हेक्टेयर हो गया।

8. ऋण मुद्रियाएँ ( Credit Facilities )—साकाराती योजना के अन्तर्गत किसानों को ऋण की मुद्रियाएँ प्राप्त होने लगी। पहले किसान अपनी आवश्यकता का 90 प्रतिशत ऋण महाबंदरों से उचित ब्याज पर लिया करता था जिसे युक्ताका उत्तरांक लिए बहुत कठिन हो

जाता था। परन्तु अब किसानों को सहाकारी समितियों द्वारा उपलब्ध से अधिक बढ़ाव प्रदान किया जाता है। 1967-68 में सहाकारी समितियों ने 400 करोड़ रुपये के लक्ष्य प्रदान किए, जो बढ़कर 1985-86 में 800 करोड़ रुपये, 1985-86 में 3,500 करोड़ रुपये तक (1986-91 में 4,000 करोड़ रुपये के बीच था)। सन् 1969 में अवशोषक बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया जिससे किसानों को ज्ञात की सुविधा भी बढ़ गई। 1969-70 में इन बैंकों द्वारा किसानों को 183 करोड़ रुपये के लक्ष्य दिए गए। सन् 1990 में छोटे किसानों के द्वारा इकाई कार्यों से कम ज्ञानी को माफ़ करने की आवश्यकता की गई। कम व्यापक पर अवशोषक नुस्खा लक्ष्य मिलने पर किसान उचित बाज़ में उत्तम बीज़ बुनि-वर्त उत्पादक भावी खातों द्वारा लाभ है और किसानों के साधनों का उचित उपयोग कर सकता है।

**८. भू-परीक्षण (Soil Testing)**—हीरो इनियों के विस्तृत गृह सुध चालक भी आवश्यक है। इस सदृश में सरकार ने विस्तृत कार्यक्रम बनाकर किसानों अनुग्रहीय परिषद़ द्वारा को मुद्रा का सहायता उपलब्धतामुद्देश में परोक्षण किया जाता है। इन परीक्षणों में यह ज्ञाता जाता है कि उचित प्रकार की मिट्टियों में किस तात्परी को करनी है और उसे किस उत्पादकों के लाभ में दूर किया जा सकता है। इसके साथ ही यह भी ज्ञात जाता है कि कौन-सी मिट्टी में कौन-सी प्रभाव अधिक होती और उसमें किस प्रकार के बीज़ बोर्ड जाते हैं।

**९. भू-संरक्षण (Soil Conservation)**—हीरो इनियों को सहायता देने के लिए भू-संरक्षण का कार्यक्रम भी लागू किया गया है। भूमि कटाव को रोकने तथा भूमि की उत्तरस्ता को बनाए रखने के लिए उचित उपाय किए गए हैं। यह स्थानों के विस्तार को रोकने का एक बुनियादी प्रणाली के विस्तार के लिए भी कई योग्यताएँ बनाई गई हैं। इस में लगभग दोस्त एक दूसरे भूमि को बुनियादी बनाने के लिए प्रयत्न किए जा रहे हैं। फूसलों के हर-पर (Crop Rotation) को भी प्रोत्त्वात्त्व मिल रहा है।

**१०. ग्रामीण विद्युतीकरण (Rural Electrification)**—कृषि उपकरणों को चलाने के लिए विद्युत सबमें सहाय एवं मुगम्ब गाँवों में सहायता देता है। जैसे कृषि के विकास के लिए ग्रामीण विद्युतीकरण अभी आवश्यक है। इसके लिए ग्रामीण विद्युतीकरण नियम (Rural Electrification Corporation) को स्थापित की गई है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय हमारे देश के केवल 0.5 प्रतिशत गाँवों को ही विद्युतीकरण की सुविधा मिलती रही थी। सन् 1965-66 में लगभग 8 प्रतिशत गाँवों को विद्युतीकरण की सुविधा मिलती रही थी। इसके पश्चात् ग्रामीण विद्युतीकरण में उत्तराखण्ड नूट्ड दूरी। सन् 1970-71 में 106,774 (16.5 प्रतिशत) गाँवों, 1980-81 में 2,72,625 (47.3 प्रतिशत) गाँवों, 1984-85 में 3,68,840 (64 प्रतिशत) गाँवों तथा 1990-91 में 86 प्रतिशत गाँवों को विद्युतीकरण की सुविधा थी। 2003-04 में भारत के कुल 587,258 गाँवों में से 495,031 गाँवों (अर्थात् 84.3 प्रतिशत) गाँवों का विद्युतीकरण हो चुका था। हारियाणा देश का प्रदूषा गम्भीर

बहार या सर्वो गाँवों को विद्युतीकरण कराये गए। यहां प्रदृश करनार्थक गृहस्थ, हिमाचल प्रदेश, नीतिनाथ, गाँवों को विद्युतीकरण हो चुकी है। अब गाँवों में से दर्जों

**D. विक्री संबंधी मुख्यार्थ (Marketing Facilities)**—प्राप्ति किसानों को अपनी उपलब्ध अभियानीय साधनों में वेष्टनी पहारी थी। इन अभियानीय साधनों में किसानों को उपलब्ध का उचित मूल्य नहीं मिल पाता था जिससे उनकी ज्ञान व्यापक होती थी। परन्तु लक्ष्यकारी-प्राप्ति के लक्ष्यकारी उपलब्ध की ज्ञान व्यापक हुआ और लगभग 5,600 नियमित योग्यार्थी स्वाक्षर की ज्ञान व्यापक किया। इससे हीरो इनियों को काफ़े बदला जिया।

**११. व्यापकों की कीपतों का नियोजन करना**—यह कृषि उत्पादन अधिक बढ़ जाने से बदला में व्यापकों की कीपतों के बढ़ जाने का भय रहता था जिससे कृषि उत्पादन पर उत्तीर्ण व्यापक बढ़ता था। इस समस्या के समाधान के लिए सरकार ने 'कृषि भूमि व्यापकों' (Agricultural Price Commission) नियुक्त किया। यह अधिक समय-समय पर विभिन्न व्यापकों का व्युत्तम मूल्य नियोजित करता है। जब फसलों का व्यापक व्युत्तम दूरी नियित दूरी से नीचे गिरने लगता है तो सरकार व्यवस्थ व्युत्तम मूल्य पर फसलों की लेती है। इससे किसान अधिक लाभान्वयन से बदल जाते हैं और इन कृषि उत्पादकों द्वारा जैसे लिए गए व्यापकान्वयन मिलता है। सरकार इन व्यापकों को सहीर अब सामान्य सी ज्ञान हो गई है। इस दिल द्वारा भारतीय खाद्य नियम (Food Corporation of India—FCI) भवत्ताकृत भूमिका निभा रहा है।

## हीरो इनियों के प्रभाव

### (Effects of Green Revolution)

अब विकासशील देशों की भौति भारत में भी हीरो इनियों द्वारा अधिकार्यकारी को काफ़ी हाद तक प्रभावित किया है। इसके लक्ष्य उत्पादन नियमितीकरण है :

**१. कृषि उत्पादन में बुद्धि**—1967-68 में हीरो इनियों द्वारा जैसे व्यवस्था के व्यवस्था कृषि उत्पादकों विकास, लक्ष्यकारी उत्पादन अभियानीय बुद्धि हुई। यह व्यापकों—गैरी लक्ष्य, न्यूट्रिशन लक्ष्य, मालाका—को उत्पादन बढ़ाने के लिए अधिक उत्पाद देने वाले दोनों के प्रयोग किया गया। अतः 1967 के बाद हीरो इनियों का नुस्खा उत्पादन 'अनाज ब्राह्मि' लक्ष्य हो गया। (From 1967 onwards, the Green Revolution aimed at bringing about a Green Revolution.)

लक्ष्यकारी ये दो गैरी का उत्पादन प्रदाते अधिक वर्ष 1960-61 से 1990-91 तक लक्ष्यकारी उत्पादन में व्यापक व्य-

जून की बालि रुपी अवधि में गाई के उत्पादन में पर्याप्त  
जून की बालि रुपी भाला प्राप्तः यह कहा जाता है कि भाला  
जून की बालि रुपी भाला प्राप्तः 'गाई रावण' है। (On account of this  
it is said that the Green Revolution in India is  
the 'Wheat Revolution'.)

२. विस्तारी की समृद्धि-हरित प्राकृति से पूर्ण उत्पादन में ही हरित प्रकाशन की अधिक दशा में कामी मुख्य हुआ और इसके पास गत अपार्टमेंट हुए। हरित प्रकृति से बड़े विस्तारों के प्रतीक लाभ हुआ।

३ युद्धों के अवधार में कमी—हात पर्ना ने साकाले  
के लिए यह विस्तृत जनक जगता में भारी कष्टों हुई। कभी-कभी  
जलपान का खिल्हा भी करते हैं। प्रो० वर्तेवाला के अनुसार,  
जो इन द बीं से जो समाज दिया है। इसके पलस्पर्कप साकाल  
इसके से विवाह में उत्तमाया विलेण जब्ता नियोजकों का ध्यान  
को हो जाएगा कि और नयेका। (Green Revolution has  
got a breathing time. As a result, there will be relief  
in the states of food shortage and the planners will  
concentrate more on Indian planning.)

4. **पूँजीवादी खेती** ( Capitalistic Farming )—हरित स्थिरता का लक्ष्य इसके लिए विभिन्न प्रकार की पर्याप्त उपयोगको, जो कोई लाभ का प्रबंधन किया जाता है जिसके लिए पर्याप्त धन व सामाजिक हाल होती है। इसमें कृषि में पूँजीवाद को बढ़ावा मिलता है। इसपर से अधिक पूर्ण रूप से जास्ति किसानों के जागा पर्याप्त लाभ आयता है। जिससे वे काफ़ी अधिक लागा सकते हैं।

५. उपरोक्त कांगड़ाम-हिति कानित के अन्वयात विभिन्न जो ही सीमें (जैसे-टेक्स्टर, हावेस्टर, दीलर, कम्पाइन, डीजल इंजिन इत्यादि) वाला उत्क्रानक (जैसे-नाइट्रोजन, फार्मेट, एवं लैन इत्यादि) वाला उत्क्रानक (जैसे-नाइट्रोजन, फार्मेट, एवं लैन इत्यादि) वाले विषयों पर प्रयोग किए जाते हैं। अतः इन वस्तुओं के विशेष उपयोग विवरित हो जाते हैं। स्थानान्वयन-प्राप्ति के पक्षात् विशेष उपयोगों के विवरणोंमें उल्लेखनीय उल्लेख की है।

1968-69 में यह सट्टाकार 165 तो 1970-71 में गत्तिपि मूल्य सूचकांक में 1968-69 की अपेक्षा 8.7% की वृद्धि हुई तथा इसका नियन्त्रण के मूल्य सूचकांक में 0.1% की कमी हुई। 1972-73 में यह बढ़ी 2.5% हो गई। 1974-75 में इसमें 2.3% की वृद्धि हुई। 1986-87 में मूल्य सूचकांक 7.8% की गई। आइए यहाँ से कि इसी दर्शनी ने अपने जारीमें वर्षों में मूल्यों की अधिक व्यापन से रोकने में सफलता की।

8. ग्रामीण रोजगार पर प्रभाव-कृति क्वाति का असरेंत जीव एक और मणियों के प्रयोग से बदलावारी बढ़ने का भय उत्पन्न हो गया, जहाँ दूसरी ओर वर्ष में शक में अधिक फसलें होने लाग उत्तराखण्ड के अधिकाधिक प्रयोग से बदलावी की मांग बढ़ने लगी। इसमें ग्रामीण रोजगार की प्रकृति तथा उत्तराखण्ड में पर प्रभाव पड़ा। फलाव, ईरियापा आदि गांवों में भू-स्वामियों को कसलातों की चुकावां तथा कटाई के समय अधिकारों की कमी महायुक्त होने लगी है। परन्तु भीर-भीर इस कमी को मणियों के अधिकाधिक प्रयोग में पृष्ठ करने का प्रयास किए जा रहे हैं। अतः हारित क्वाति के कालम्बक्षय ग्रामीण इलाकों में बेरोजगारी बढ़ने की सम्भावना हो सकती है।

9. किसानों की विचारधारा में परिवर्तन (Change in the Attitude of Farmers) – भारतीय किसान प्राचीन काल से ही अनपढ़, अदृष्टवादी तथा अन्यविकासी रहा है। वह कृषि के पुण्ये दग ही अपनाता रहा और अपनी निर्धनता तथा अज्ञानता को अपने दुष्प्राण्य का परिणाममात्र समझता रहा। परन्तु जारित ज्ञानी ने भारतीय किसान की विचारधारा में प्रूतभूत परिवर्तन किए। जिस समझदारी से किसानों ने नई कृषि-पद्धति को अपनाया, उसमें यह छम दूर ही गया है कि भारतीय किसान नए विचारों तथा तकनीकों को नहीं अपना नहएंगे। बुल्क लाइनिंगकी के शब्दों में, “जहाँ कहाँ भी नहीं तकनीकी मिलती है, किसी भी किसान ने उसके प्रभाव से इन्हाँ नहीं किया। उसमें कृषि विधियां तथा उच्च जीवन स्तर की उपचार कंवल मिसे जुने वह किसानों में ही नहीं बढ़ रही, बल्कि यह उच्च छोटे किसानों में भी बढ़ रही है जो अपनी फाल की प्रतीक्षा कर रहे हैं।” (Where the ingredients for the new technology are available no farmer denies their effectiveness. The desire for better farming methods and a better standard of living is growing not only among the relatively small number of affluent using the new technology, but also among countries farmers still from outside looking in.)

हरित क्रांति के दोष अथवा समस्याएँ

### **(Demerits or Problems of Green Revolution)**

हरित कांडी की सफलता के यथ्य में विद्वानों में चतुर्भेद है। कुछ विद्वान तो इसे पूर्णतः सफल कांडी मानते हैं जिसमें भारत सरकार का अन्य किकासशील देशों में कृषि उत्पादन में सचमुच ही कांडी स्थान है। परन्तु कुछ अन्य विद्वानों का मत है कि हासिल कांडी से प्राप्यता

<sup>1</sup> See Lalaji, 'How Green is India's Revolution', Economic and Political Weekly, 29 Dec., 1973, p. A-134.